23/09/2020

Lecture Notes

Lecture Part II

B.A Part III

Paper VI

Topic —

Present a programme for the education of Physically handicapped

Dr. Kumari Sadhana Prasad
Associat Prof.
Dept of Psychology

(2) विशिष्ट अध्यापन सामग्री (Special didactic materials) शिक्षा- विशेषज्ञों ने ऐसे बालकों की शिक्षा के लिए कुछ खास किस्म की अध्यापन - सामग्री की सलाह दी है। मोटे अक्षरों में स्पष्ट रूप से छपी पुस्तकों का प्रबन्ध होना चाहिए ताकि दृष्टि शक्ति कमजोर होने पर भी बालक उन्हें आसानी से पढ़ सकें। अध्ययनों से पता चलता है कि 18 से 24 Points की छपाई अधिक उपयुक्त है। दूसरी बात यह कि उन्हें हल्का पीला रंग (Cream colour) पर लिखने को कहा जाए और तीसरी बात यह कि उन्हें भारी लीड वाली पेन्सिल (heavy loaded pencil) से लिखने के लिए कहा जाए।

(3) दृष्टि सम्बन्धी सहायता (Visual aids) :— दृष्टि- दोष से पीड़ित बालकों की शिक्षा की व्यवस्था सामान्य वर्ग (General class) में भी की जा सकती है। ऐसी हालत में उन्हें दृष्टि संबंधी सहायता मिलनी चाहिए ताकि वे सामान्य बालकों के साथ चल सकें इसके लिए आवश्यकता अनुसार चश्मा आदि का प्रबन्ध किया जा सकता है।

(4) सामान्य बालकों के साथ आवृत्ति करना (Recitation with normal Children) :— संरक्षण कक्षा में पढ़ लेने के बाद ऐसे बालकों को सामान्य दृष्टि वाले बालकों के साथ रखा जाए तथा पढ़े गए विषयों को दुहराने के लिए कहा जाए। लेकिन यहाँ शिक्षक को बहुत सावधान रहना होगा ताकि वे आवश्यकता पड़ने पर उन्हें दृष्टि संबंधी सहायता दे सकें। इस प्रकार वे लिखना- पढ़ना सीखने के साथ -साथ सामान्य बालकों के साथ सामाजिक एवं संवेगात्मक अभियोजन कायम करना भी सीख सकेंगे।

अतः इन योजनाओं के आधार पर आंशिक या अर्द्ध अन्धे बालकों की शिक्षा की समुचित व्यवस्था की जा सकती है।

बहरे बालकों की शिक्षा - शिक्षा कार्यक्रम (Education of deaf childern) :—

बहरापन के मुख्य दो प्रकार है—

(i) पूर्ण बहरापन तथा

(ii) आंशिक बहरापन।

आंशिक बहरापन की मात्रा कम या अधिक हो सकती है। कुछ बालकों में 30 से 40% श्रवण-क्षति होती है। इसी तरह कुछ में 40 से 70% तक। जिन बालकों में यह क्षति 70% से अधिक होती है, उन्हे शैक्षिक बहरा (educational deaf) कहा जाता है। अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि 35 से 40% बहरापन वंशपरम्परा के कारण होता है और शेष जन्म के बाद प्रायः शैशवास्था (infancy) में जुकाम (Cold), इनफ्लूएन्जा (influenza), कुकुरखाँसी (hooping cough), शीतल रोग (measles), स्कारलेट ज्वर (Scarlet fever) आदि के कारण होता है। पूर्ण बहरे बालकों की अपेक्षा अर्ध या आंशिक बहरे बालकों के लिए शिक्षा की व्यवस्था करना आसान है। Wallin तथा Kolstoe (वालिन, कोलस्टो) ने दोनों प्रकार के बालको के शिक्षा-कार्यक्रम (educational programme) का अलग-अलग वर्णन किया है।

(i) पूर्ण बहरे बालक — Wallin & Kolstoe ने पूर्ण बहरे बालकों की शिक्षा के लिए कई उपायों का वर्णन किया है। ऐसे बालक चूँकि सुन नहीं सकते, इसलिए वे भाषा नही सीख पाते और इस तरह इन्हें शिक्षा देना बहुत ही कठिन हो जाता है। अतः शिक्षा से अधिक इनके अभियोजन पर ध्यान देने की आवश्यकता होती है। इस संबंध में निम्नलिखित बातें मुख्य है —

(i) विद्युत पद्धति (electric devices) :— आधुनिक वैज्ञानिकों के सक्रिय प्रयास से कुछ ऐसे विद्युत-यंत्र बनाए गये हैं जिनकी मदद से बहरे बालकों की शिक्षा कुछ हद तक संभव हो सकी है। जैसे — श्रवण क्षति के प्रकार एवं मात्रा को मापनेवाला यन्त्र, श्रवण केन्द्र (Hearing Centre) को निश्चित करने वाला यन्त्र, सुनने मे सहायता करनेवाला यंत्र चिकित्सा द्वारा श्रवण क्षति को दूर करके बालकों को सुनने योग्य बनाना आदि इन उपायों से बालकों को पहले यथासंभव सुनने के लायक बनाया जाता है और फिर इनकी योग्यता एवं अभिरुचि के अनुसार इनकी शिक्षा की व्यवस्था की जाती है।

(2) राजकीय आवासीय स्कूल (State residential School) :-
बहरे बालकों की सबसे बड़ी समस्या यह है कि उनकी भाषा बहुत ही सीमित होती है। कारण यह है कि बच्चे भाषा को सुन कर ही सीखते हैं। लेकिन, बहरापन के कारण वे शब्दों को सुन नहीं पाते और इस तरह शब्दों को सीखने में असमर्थ होते हैं। अतः ऐसे बालकों की शिक्षा के लिए कुशल एवं प्रशिक्षित शिक्षक, विशिष्ट पाठ्यक्रम एवं विशिष्ट अध्यापन- विधि की आवश्यकता होती है। यह तभी संभव है जब उनके लिए राजकीय स्कूल की स्थापना हो, जहाँ वे रह कर शिक्षित हो सके। जब वे इस योग्य बन जाए कि सामान्य बालकों के साथ शब्दों का संचारण कर सकें तो उन्हें उनकी मानसिक योग्यता एवं अभिरुचि के अनुकूल पब्लिक स्कूल में सामान्य बालकों के साथ शिक्षा दी जाए ताकि वे शिक्षा के साथ -साथ अभियोजित होना भी सीख सकें।

(3) विशिष्ट -पाठ्यक्रम (Specialized curriculum) —
यह एक सच्चाई (वास्तविकता) है कि जिन बालकों में बोलने तथा सुनने की क्षमता नहीं होती उनमें दूसरी अन्य क्षमताएँ अपेक्षाकृत अधिक तीव्र होती है। उनमें एकाग्रता (concentration) की क्षमता भी अधिक होती है। अतः ऐसे बालकों के लिए इस प्रकार के विषय चुने जाएँ जिनमें बोलने एवं सुनने की आवश्यकता न पड़े या कम पड़े। जैसे— लकड़ी का सामान बनाना, मिट्टी के बर्तन एवं खिलौना बनाना, मिस्त्री का काम सीखना आदि क्रियात्मक कार्य (motor work) उन्हें सिखाए जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त सिलाई करना, जूता बनाना या मरम्मत करना, बुनाई करना आदि कामों को वे सीख सकते हैं। मगर, विभिन्न क्रियात्मक कार्यों की व्यवस्था करते समय बालकों की मानसिक योग्यता एवं अभिरुचि को ध्यान में रखना होगा।

अतः उपर्युक्त योजनाओं की सहायता से बहरे बालकों की शिक्षा एवं अभियोजन का सुन्दर प्रबन्ध किया जा सकता है।

(2) आंशिक बहरे बालक—
पूर्ण बहरे बच्चों की अपेक्षा आंशिक बहरे बालकों की शिक्षा आसान है। इस संबंध में कुछ उपाय जिनमें निम्नांकित मुख्य हैं—

(1) श्रवण- सहायता (hearing ads) :—
अर्थ या आंशिक बहरे बालकों को श्रवण सहायता से लाभ उठाना चाहिए। इस सहायता से वे अपने शिक्षक या दूसरों की बातों को अधिक स्पष्ट तथा अधिक आसानी से सुन सकेंगे। आजकल इस प्रकार की

इयर फोन (Ear- phones) उपलब्ध हैं जिनसे सुनने में काफी सुविधा होती है। बालकों को इन यंत्रों को इस्तेमाल करने का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। उनकी शिक्षा की व्यवस्था उनकी योग्यता एवं अभिरुचि के अनुसार होनी चाहिए।

(2) सामान्य कक्षा (General class) :—

ऐसे बालकों को किसी अलग स्कूल या वर्ग में शिक्षा देने की जरूरत नहीं है, बल्कि सामान्य कक्षा में ही सामान्य श्रवण- क्षमता वाले बालकों के साथ दी जाय। लेकिन, शिक्षक को यहाँ कुछ खास सावधानी बरतने की आवश्यकता है। पहली बात यह कि ऐसे बालकों को कक्षा में सामने तथा शिक्षक के समीप बैठाना चाहिए ताकि वे शिक्षक के होठों की गति को देख सकें। दूसरी बात यह कि शिक्षक कभी - कभी इस बात की जाँच कर ले कि सुनने वाला यंत्र ठीक से फिट है या नहीं। और तीसरी यह कि होठों की गति को देखकर बातों को समझने का ज्ञान बालकों में विकसित किया जाना चाहिए। यदि वर्ग में इसकी व्यवस्था संभव न हो तो किसी दूसरे स्थान पर इसका प्रबन्ध करना चाहिए।

(3) सामाजिक प्रबलन (Social reinforcement) :—

ऐसे बालकों को चूंकि सामान्य रूप से सुनने वाले बालकों के साथ ही शिक्षा दी जाती है, इसलिए उन में हीनता की भावना उत्पन्न होने की पूरी संभावना रहती है। शिक्षा की दृष्टि से भी यह भावना काफी हानिकारक है। अतः इससे बालकों को बचाने के लिए शिक्षक को चाहिए कि बालकों में यह विश्वास पैदा करें कि वे सामाजिक रूप से मान्य हैं। इसके लिए उन में आत्म- विश्वास, आत्म निर्भरता (Self- dependence) आदि शीलगुणों को विकसित करना आवश्यक है।

इस तरह उपर्युक्त योजनाओं को कार्यान्वित करके आंशिक या अर्ध बहरे बालकों की शिक्षा की समुचित व्यवस्था की जा सकती है।